ISSN-2231-2161

कथाक्रम

वर्ष : 20 अंक : 76

अप्रैल - जून 2018

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

16 वन्दना शुक्ला : निर्वेद
25 मीना गुप्ता : यक्ष-प्रश्न
29 डा. ऋचा पाठक : सन्नाटे की झील
38 मानवी वहाणे : क्षितिज पर मिलेंगे...
62 शाश्वती रूद्र : हैलोविन
69 डा. मनोज मोक्षेंद्र : ऐंटी ओल्डगीन
73 शहादत : बेमंज़िल रास्ते
78 संजय कुमार अविनाश : अतीत एक स्मृति
83 हरप्रीत सेखा : कविता के आर-पार
अनुवाद-सुभाष नीरव

लघुकथाएं

28 सुशांत सुप्रिय : धूप
61 सुशांत सुप्रिय : नौकरी
102 विनय सिंह : जड़ें

साक्षात्कार

04 डॉ. सीमा शर्मा से ममता कालिया की बातचीत : किसान और लेखक एक समान होते हैं!

कथा नेपथ्य

10 मधुरेश : खुंस और खुंदक की इलाहाबादी शैली

आलेख

51 विनोद शाही : हिंदी आलोचना : अपनी ज़मीन और ज़ुबान की तलाश
58 मूलचन्द गौतम : डॉ.अम्बेडकर की दृष्टि और दलित साहित्य का अभ्युदय

कविताएं

88 नीरज नीर : सूरज के पीठ पर बैठी औरत, औरतें कवि होती हैं, अदृश्य दीवार, सद्दाम लटका की मृत देह
90 राजकुमारी : ध्वनि, पर्दा
91 अजित कुमार राय : आरण्यक, कविता की व्याप्ति
92 पूनम भार्गव ज़ाकिर : गणित, कोना

राग लन्तरानी

93 सुशील सिद्धार्थ : सम्मान सन्निपात अवतार

सिनेमा

96 विजय शर्मा : पैडिक : तर्क और विश्वास का संघर्ष

यात्रा-वृत्तांत

100 डॉ. कविता विकास : घुमक्कड़ों की नगरी-धर्मशाला

समीक्षाएं

103 गुजरात दोनों जगह : गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान (उपन्यास): **चंद्रकला त्रिपाठी**, आधी अधूरी दास्तां (उपन्यास) : **रजनी गुप्त**, स्थानीय परिदृश्य में सुभाष की तलाश (उपन्यास) : **प्रताप दीक्षित**, सृजन का रसायन : रचनाधर्मिता का नया पाठ (साक्षात्कार) : **डॉ. विद्या सागर सिंह**, विकल्पहीन ही रहेगा प्रेम (कहानी संग्रह) : **डा. गौरी त्रिपाठी**, यादों के गलियारे से रचनात्मक यात्राओं तक (संस्मरण) : **कैलाश मण्डलेकर**, नई सदी की नई स्त्री (स्त्री विमर्श) : **इन्दु कुमारी**, कही अनकही दास्तां : मैं गोवाई अपने समय का (आत्मकथा): **डॉ. विद्या सागर सिंह**, फूलों और कांटों से भरे जीवन की सच्चाइयां (उपन्यास): **अमित कुमार**।

2 सम्पादकीय : अस्मिता का संकट
आवरण कलाकृति : बंशीलाल परमार
रेखाचित्र : राधेलाल बिजघावने

संपादक
शैलेन्द्र सागर
संपादन सहयोग
रजनी गुप्त
सहयोग
मीनू अवस्थी
प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव
संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@rediffmail.com
e-mail : kathakrama@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 35 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹

(सारे भुगतान मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257-गोलागंज, लखनऊ। फोन : 0522-2200425

लेखक महसूस करता है कि देश की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां इस कदर भयावह हैं कि आम आदमी का जीवन मुश्किल हो रहा है। आर्थिक वैषम्य, सामाजिक वैषम्य एवं राजनीतिक विद्रूपताओं के जाल में फंसकर मनुष्य अपनी मनुष्यता खो बैठा है। इसलिए 'योगी भी भोगी भी' अध्याय में एक लोकगायक के गायकी के माध्यम से पूरी व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। शिवमूर्ति लिखते हैं कि 'मेरे क्षेत्र का एक लोकगायक गा रहा था.....

काहे गोलिया चलेला दनादन भइया ?

तनी खड़ा होके सोचा एक छन भइया ?

केहू के भरल सूटकेस भांति-भांति के डरेस।

केहू के मरले पै मिले न कफन भइया।" (पृ.सं. 116)

लेखक की कोई जाति नहीं होती उसका कोई धर्म नहीं होता। वह विश्व नागरिक होता है। यदि ऐसा नहीं है तो वह लेखक नहीं हो सकता। यह सच है कि व्यक्ति जिस वर्ग या वर्ण में पैदा होता है उसी की सोच, आदर्श व आकांक्षाओं को क्रमशः अंगीकार कर लेता है। समाज में वो उसको मान-सम्मान तिरस्कार-घृणा-प्यार, हिंसा या भय मिलता है, वही उसके अवचेतन का हिस्सा बनता चलता है। प्रायः बदले में वह इन्हीं संवेगों को समाज के लिए वापस करता है। (पृ.सं. 121)

प्रकृति क्रिया व्यापार को स्वीकार करती है। एक हाथ से ले और दूसरे हाथ से दें। यह प्रकृति और मनुष्य के बीच के रागात्मक व्यवहार है। जीवन की सोद्देश्यता इसी में अंतर्निहित है कि आप जीवन के बदले जीवन को लौटाते क्या हैं। वह है सर्जनात्मकता जिसे आप प्रकृति से पाकर उस तक पहुंचा देते हैं और अपनी जिंदगी को सार्थकता प्रदान करते हैं। शिवमूर्ति लेखकीय कर्म द्वारा जीवन की सार्थकता को सृजन के माध्यम से परिपूरित कर रहे हैं। चेतन अवचेतन का द्वंद्व और इनके बीच का सामंजस्य ही सृजनात्मक क्षमता को आगे बढ़ाने का कार्य करती है। लिखना एक सहज सरल अभिव्यक्ति है लेकिन सोद्देश्य लिखना लेखक का गुरुतर दायित्व भी है। हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद के लेखकों में गंवई विमर्श धीरे-धीरे हाशिये पर चला गया। शिवमूर्ति उसे खींचकर केंद्र में लाते हैं। लेखक हाशिये के समाज और उनके भीतर पनप रहे प्रतिरोध को जीवंतता प्रदान कर अपनी साहित्यिक लेखकीय दायित्व का इतिश्री नहीं मान लेता है बल्कि तिरियाचरित्तर की नायिका बिमली के संघर्ष को कुच्ची का कानून तक विस्तारित कर उसे न्याय की प्रक्रिया में शामिल कर लेता है। पंचायत व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करके लेखक परंपरागत सड़ी-गली एवं जड़वत बन चुकी न्यायिक प्रणाली पर उंगली उठाता है और जवाहर लाल नेहरू के कानून को अप्रासंगिक करार देता है। सत्ता अपने चरित्र में मनुष्य विरोधी होती है। फिर भी लोकतांत्रिक सत्ता में जनतांत्रिक प्रस्फुटन की संभाव्यता हमेशा बनी रहती है जो मनुष्यता की भावभूमि की निर्मिति में सदा सहायक होती है। अनंत काल से सत् एवं असत् प्रवृत्तियों का संघर्ष जारी है। मनुष्यता अमानुषिकता के बीच की रस्साकसी कायम है। फिर भी साहित्यकार लेखक दोनों के बीच सामंजस्य बिठाने की लगातार कोशिश कर रहे हैं। शिवमूर्ति जैसे लेखक संपूर्ण ईमानदारी से लेखकीय दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। सृजन का रसायन के माध्यम से शिवमूर्ति ने लेखन कर रहे लोगों के लिए एक संदेश भी छोड़ा है। 'लेखक विश्व नागरिक होता है'।

□□

हिंदी विभाग
चौ. चरण सिंह वि.वि., मेरठ

विकल्पहीन ही रहेगा प्रेम

□ **डॉ. गौरी त्रिपाठी**

समीक्ष्य कृति –उत्तर समय की प्रेम कहानियां (कहानी संग्रह) संपादन : शैलेंद्र सागर प्रकाशक-नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

प्रेम इस धरती का सबसे खूबसूरत शब्द है। इसी प्रेम के होने, ना होने से बहुत कुछ जीवन की सार्थकता और निरर्थकता तय होती है। दुनिया के सभी सिद्धांतों और दर्शनों पर भारी पड़ने वाला शब्द है- प्रेम। प्रेम सभी के लिए एक स्वाभाविक जरूरत है, इसकी अनुभूति हमें जीवन जीने की प्रेरणा देती है। हमारा साहित्य तो हमेशा प्रेम के पक्ष में खड़ा रहता है। किसी भी रचनाकार की कसौटी भी होती है कि उसने प्रेम पर क्या और कैसे लिखा है? शैलेंद्र सागर द्वारा संपादित यह कहानी संग्रह प्रेम के विविध आयामों को हमारे सामने खोलता है। इस संग्रह में हमें उत्तर समय की प्रेम कहानियां पढ़ने को मिलती हैं। इन प्रेम कहानियों में समय का उत्तर पक्ष सजीवता से देखा जा सकता है।

प्रेम की अनुभूति करना जितना सरल है उस पर लिख पाना उतना ही कठिन। महसूस किए प्रेम को लिख पाना ठीक-ठीक किसके बस का हुआ है ?उसका कुछ अंश ही साहित्य में लिखा